International Journal of Applied Research 2015; 1(7): 837-839

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(7): 837-839
www.allresearchjournal.com
Received: 21-04-2015
Accepted: 24-05-2015

गुंजन कुमारी
शोधार्थी, विश्वविद्यालय–हिन्दी–विभाग,
ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
गुंजन कुमारी
शोधार्थी, विश्वविद्यालय–हिन्दी–विभाग,
ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार, भारत

नागार्जुन की कविताओं में राजनीतिक व्यंग्य

गुंजन कुमारी

सारांश
हमारे देश की राजनीति के क्षेत्र में चलने वाले उथल–पुथल के कारण पिसती हुई जनता की स्थिति को नागार्जुन ने अपनी कविताओं में व्यंग्य के माध्यम से उजागर किया है। नागार्जुन को भारत की राजनीति के ठेकेदारो का दो मुँहापन सहन नहीं होता है और वह राजनीति के क्षेत्र में खुलकर सामूहिक एवं व्यक्तिगत रूप से सभी पर व्यंग्यबाण चलाते हैं। इस आलेख में एक ओर नागार्जुन की रचनाओं के कुछ पंक्तियाँ संदर्भ के रूप में प्रस्तुत करते हुए उनके द्वारा राजनीति के दलालों, नेताओं आदि का पोल खोलने वाले व्यंग्य का उल्लेख किया गया है तो दूसरी ओर राजनेताओं के द्वारा सताये जाने वाले किसान, मजदूर के व्यथा का भी वर्णन है। नागार्जुन का राजनीतिक व्यंग्य ही उनको एक अलग पहचान देने का कार्य किया है।

प्रस्तावना
नागार्जुन के जीवन का विस्तार उनकी कविता में मिलता है, नागार्जुन के पास व्यंग्यों की सटीक प्रभावी विशाल पूँजी है, जिसकी अन्यतम कोई मिशाल नहीं है। उनकी राजनीतिक कविताओं का क्षेत्र व्यापक है जिसमें सत्तासीनों की निरंकुशता के विरूद्ध व्यंग्य बाण चलाया है। राजनीति जीवन के सभी क्षेत्रों को प्रभावित करती है। साहित्य में देश, काल, समाज और उसकी व्यवस्था प्रतिबिम्बित होती है, इसलिए कविता में राजनीतिक चेतना का अभिव्यक्ति होना अस्वाभाविक नहीं है। यदि व्यवस्थित रूप से देखा जाय तो नागार्जुन का पहला काव्य संग्रह आजादी के छः साल बाद 1953 में 'युगधारा' के नाम से आया। उनका अंतिम संग्रह 1997 में 'अपने खेत में' प्रकाशित हुआ। प्रथम और अंतिम काव्य–संग्रह के बीच का लंबा अंतराल भारतीय राजनीति का वह कालखण्ड है जो देश की राजनीतिक विडम्बनाओं और आम जनता की तकलीफों को अभिव्यक्त करता है।
राजनीतिक व्यंग्य में नागार्जुन की पैनी दृष्टि से शायद ही कोई प्रसंग छूटा हो। नागार्जुन देश की राजनीति से असंतुष्ट थे। यह उनकी कविताओं में स्पष्ट दिखाई देता है। जनता के विकास के लिए पंचवर्षीय योजनाएँ बनायी गयी परन्तु वह केवल कागज पर रह गई। बेचारी जनता सिर्फ इस योजनाओं की घोषणा सुन सकती है। असत्य में यह योजनाएँ पूजीपतियों का ही हितरक्षण करती है। नागार्जुन का मानना था जिन नीतियों से सामान्य जनता का रक्षण नहीं किया जाता वह नीति किसी काम की नहीं होती है। इनकी घोषणाओं से भला जनता को पेट थोड़े ही भरेगा? राजनेता की इसी वोटप्रिय और स्वार्थप्रिय नीति पर व्यंग्य करते हैं–

"अभी–अभी उस दिन मिनिस्टर आए थे
बत्तीसी दिखलाई थी, वादे दुहराए थे।
भाखा लटपटाई थी, नैन शरमाए थे
छपा हुआ भाषण भी पढ़ पाए थे
जाते वक्त हाथ जोड़, तो भी मुस्कुराए थे
अभी–अभी उस दिन मिनिस्टर आए थे।"[1]

राजनीति के क्षेत्र में चलनेवाले भ्रष्टाचार पर नागार्जुन ने बड़े तीखे व्यंग्य किये हैं। एक नेता दूसरे नेता को भ्रष्ट साबित करने की कोशिश करता है परन्तु किसी न किसी माध्यम से हर कोई अपनी तिजोरी भरना चाहता है। छल–कपट करके जनता को कंगाल किया जाता हैं। जनता के मदद के लिए दी गई सरकारी धनराशि को बीच में ही हजम किया जाता है। प्राकृतिक आपदा के समय सरकार जनता की मदद के लिए उचित राशि का बन्दोबस्त करती है परन्तु उसे नेताओं और अफसरों जनता तक पहुँचने ही नहीं देते। जनता की मजबूरी का उनकी पेट पर लात मारकर फायदा उठाया जाता है।

नेताओं और अफसरों के भ्रष्टाचार से सने मुखौटा से नकाब उतारते हुए कवि लिखते हैं–

"सूखा–राहत सुपरफास्ट है
अब कुर्सी का चांस लास्ट है
फौरन–फौरन जल्दी–जल्दी
जमा करो तुम धनिया हल्दी
सारा कुछ लॉकर में डाला।"[2]

स्वाधीनता के बाद नागार्जुन के राजनीतिक व्यंग्य उभरकर आते हैं। भारतीय जनता और राष्ट्रीय सम्मान की रक्षा करना प्रमुखतः उनके राजनीतिक व्यंग्य का उद्देश्य है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय जीवन में बहुत बड़ी विसंगति का निर्माण हुआ। देश की भोली–भाली जनता आजादी से पहले आजाद भारत के रामराज्य का स्वप्न देख रही थी, जो तत्कालीन समय में उनकी सबसे बड़ी ताकत थी परन्तु आजादी के बाद राजनेताओं के विश्वाघात के कारण वही रामराज्य एक व्यंग्य बन कर रह गया। प्रेम, भाईचारा ये शब्द केवल आश्वासन के तले दबे थे। जनता के प्रति सजग रहकर नागार्जुन राजनेताओं के दमनचक्र की पोल खोलते हैं–

"लाज शरम रह गई न बाकी गाँधी जी के चलों में।
फूल नहीं लाठियाँ बरसती रामराज्य की जेलों में।।
भैया लंदन ही पसंद है आजादी की सीता को
नेहरू अब उमर गुजारेंगे अँगरेजी खेलों में।।"[3]

भारत की आजादी को नागार्जुन कागज की आजादी कहते हैं–

"कागज की आजादी मिलती ले लो दो–दो आने में
लाल भवानी प्रकट हुई है सुना है तेलंगाने में।"[4]

यहाँ नागार्जुन आर्थिक और राजनीतिक आजादी में तालमेल बिठाना चाहते हैं। भारतीय जनता के इस अपमान की प्रतिक्रिया है राजनीति पर लिखी हुई नागार्जुन की व्यंग्य कविताएँ। टके की मुस्कान, करोड़ो का खर्चा, आओ रानी हम ढोएँगे पालकी आदि प्रसिद्ध कविताओं से भी समझी जा सकती है और मुख्य रूप से भावावेश वाली कविताओं से भी जिनमें–

"रामराज्य में अबकी रावण नंगा होकर नाचा है
सूरत सकल वही है, भैया बदला केवल ढांचा है
भारत माता के गालों पर कसकर लगा तमाचा है।"[5]

भारत में परोक्षतः औपनिवेशिक सत्ता के जीवित होने का कवि ने संकेत दिया है। 'रामराज्य' सत्ता के जीवित होने का कवि ने संकेत दिया है। 'रामराज्य' का तत्कालीन संदर्भ इन कविताओं को पुराकथा से जोड़नेवाला प्रेरक बना है। जनता के हमदर्द और हिस्सेदार की हैसियत से नागार्जुन सांस्कृतिक जीवन के इन प्रतीकों की चालक भावशक्ति के अच्छी तरह पहचानते हैं। राजनीतिक एवं व्यंग्यात्मक कविताओं के संदर्भ में पुराकथाओं का उपयोग करनेवाली नागार्जुन की अंतर्दृष्टि की एक अन्य विशेषता की ओर ध्यान देना भी रोचक है। नागार्जुन यह जानते और मानते हैं कि आधुनिक भारत में गाँधीजी से बड़ा दूसरा जननेता नहीं हुआ। जिसने राष्ट्रीय स्तर पर जनता को इतनी बड़ी संख्या में राजनीति में सक्रिय किया हो। इसलिए उनकी हत्या पर वे इतने भावकुल हुए। गाँधीजी के प्रति वशीभूत होकर वे न तो गाँधीजी का मूल्याकंन करते है और न ही गाँधीजी के अनुयायियों के दो मुँहेपन पर हमला करते हैं। यह समझने के लिए उनकी प्रतिनिधि पंक्तियाँ मानी जा सकती है–

"बापू के भी ताऊ निकले तीनों बंदर बापू के
सरल सूत्र उलझाऊ निकले तीनों बंदर बापू के।"[6]

नागार्जुन तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी को दोषी मानते है। हिटलर, बाघिन, डाइन, चुड़ैल आदि प्रतीकों का प्रयोग कर कवि अमानवीय प्रवृत्ति को दर्शाते हैं। राजनीतिक अत्याचार से निर्मित विसंगति कवि को मान्य नहीं है। सरकार द्वारा जनहित में बनायी गई योजनाएँ जब स्वार्थनीति में जारी की जाती है तब नागार्जुन आगबबूला हो जाते हैं। बाढ़ हो या अकाल इससे नुकसान जनता को और फायदा राजनेताओ का होता है। जब जनता पर संकट आता है तो उसे दूर करना जन–प्रतिनिधि का प्रथम कर्तव्य है। परन्तु जनता की खबर लेने के बजाय ये नेता हवाई जहाज में बैठकर बाढ़ पीड़ित को देखते हैं और अपनी पिकनिक का मजा लेते हैं। केवल औपचारिकता निभाते हुए अपनी कुर्सी मजबूत करनेवाले अवसरवादी नेताओं के आडम्बर पर कवि व्यंग्य करते हैं–

बाप रे बाप, किस तरह करते हैं गगन–विहार
हवाई निरीक्षण से ही होगा पब्लिक का उद्धार
अच्छा, आपका तो नहीं है, किसी दल से सरोकार?
पढ़े–लिखे लोग हैं, आपसे डरता हूँ सरकार!
मैंने कहा कोई बात नहीं आते ही रहते हैं संकट
कहाँ तक होइएगा परेशान, पानी भी तो रहा घट!
मधुकर, गंगाघर ने लिए थे फोटो झटपट
कैमरे की रील घूम गयी खट–खट–खट।"[7]

नागार्जुन के व्यंग्य के भेदक क्षमता के पीछे का रहस्य यथार्थ है। नागार्जुन की तीव्र दृष्टि यथार्थ को 'अत्यंत' गहराई से पकड़ती है। हमारे देश की राजनीतिक प्रणाली जितनी सफल और सपाट दिखाई देती है उससे कहीं अधिक लाग–लपेट कर वह जनता को भ्रमित करती है। देश में राजनीतिज्ञों द्वारा जगह–जगह किए जा रहे नाटकों की सच्चाई नागार्जुन जनता के सामने ला रखते हैं।

"आश्वासन की मीठी वाणी भूखों को भरमाती
पाला पड़ता है लेकिन वह नंगों को गरमाती
जनमन तो आडम्बर प्रिय है, प्रिय है उसको नाटक
खोल दिये है तुमने कैसे इंद्रसभा के फाटक।"[8]

नागार्जुन की यह व्यंग्यात्मक टिप्पणी हमारी राजनीति व्यवस्था की पोल–खोलकर जनता के सामने ला रखती है। नागार्जुन व्यंग्य व्यवस्था का मुखौटा उघाड़ना है, चुनौति देता है, फटकारता है और धीरे–धीरे सहलाते हुए गालों पर तमाचा जड़ता हुआ कबीर के व्यंग्य की याद दिलाता है। सत्ता व्यवस्था की गंदी नीति पर चुटीले व्यंग्य करते हैं। शेषित–उपेक्षित जनसामान्य की अधम स्तरीय जीवन–शैली में जीने की मजबूरी से द्रवित और राजनीत के छल–छद्म की गहरी पहचान कर उनकी गलत नीतियों की धज्जियाँ उड़ाने के लिए नागार्जुन के व्यंग्य कविता का सुदृढ़ आधार अपनाया। उन्होंने सीधी, निर्द्वन्द्व और तीखे प्रश्नों से छद्म राजनीति की बखियां उधेड़ते हैं। बाबा नागार्जुन ऐसे व्यक्तित्व के स्वामी रहे कि सामाजिक–राजनैतिक विद्रूपताओं का कड़ा विरोध करने से कदापि मुंह नहीं मोड़ा। हकूमत चाहे देशी हो या विदेशी उन्होंने सत्ता की जन–विरोधी नीतियों के विरूद्ध अपनी रचनाओं से आर–पार की संघर्ष–शैली अपनाई। अपने ही राष्ट्र में राजनैतिक स्वार्थपरता की अंधी दौड़ में नैतिकता की धज्जियाँ उड़ाते नेताओं पर नागार्जुन का विरोध तीखे व्यंग्य में बड़ी सपाट बयानी के साथ एक निडर अभिव्यक्ति के रूप में उभरा है। बिना किसी लाग–लपेट के बाबा ऐसे नेताओं को सीधे कटघरे में खड़ा कर पैने प्रश्न पूछकर चुटकीला व्यंग्य करते रहे।

नागार्जुन की तात्कालिक घटनाओं पर लिखी कविताएँ भी आज तक जीवंत और लोकप्रिय है। ब्रिटेन की महारानी की भारत यात्रा

के समय आजाद भारत का शासक वर्ग जिस तरह उनका स्वागत करते हुए बिछा जा रहा था, उस पर गहरा व्यंग्य करते हुए नागार्जुन ने कविता लिखी ''आओ रानी हम ढोएंगे पालकी। यही हुई है राय जवाहरलाल की''। यह कविता आज भी लोकप्रिय है। आज भी पाठकों को एक गहरी काव्यात्मक उत्तेजना प्रदान करती है। आपात काल के दिनों में इन्दिरा गाँधी की तानाशाही का मजाक उड़ाते हुए उन्होंने लिखा था–'इंदुजी, इंदुजी क्या हुआ आपको/बेटे को तार दिया भूल गयी बाप को'। यह कविता आज भी दोहरायी जाती है। ऐसी असंख्य कालजयी कविताएँ हैं क्योंकि वह भले ही किसी घटना पर तात्कालिक प्रक्रिया–सी लगती हो, वे उस घटना में निहित राजनीतिक विडम्बना को उद्घाटित करती है। इस तरह की कविताएँ उस घटना तक सीमित नहीं रह जाती। वे संपूर्ण राजनीतिक प्रणाली पर एक गहरी काव्यात्मक टिप्पणी बन जाती है।

निष्कर्ष

नागार्जुन के साहित्य में राजनीति की ऐसी मिली–जुली स्थिति है कि उन्हें अलग करके देखना एक कठिन काम है। नागार्जुन ने भ्रष्टाचार अवसरवादिता, जैसी सामाजिक कुरीतियों पर चोट की राजनीति की गरिमा तथा लोकतंत्र के मायावी जाल को तार–तार करते हुए उसके वास्तविक चेहरों को सामने लाते हैं। पूँजीपति वर्ग के शोषण एवम् अत्याचारों का विरोध व्यंग्य के माध्यम से करते हैं तथा मजदूरों किसानों एवम् छात्रों के हित की बात को बड़े जोरदार ढंग से समाज के सामने रखते हैं। नागार्जुन की राजनीतिक व्यंग्य वाली कविताएँ इस बात का प्रमाण है कि उनमें राजनीति के महत्व की पूरी और गंभीर समझ है। उन्होंने राजनीतिक व्यंग्य वाली कविताएँ अपने को ऊँचा या लोकप्रिय बनाने के लिए नहीं रची बल्कि जनता में चेतना और जागृति लाने के लिए उसके जीवन को बेहतर बनाने के लिए रची।

संदर्भ–ग्रंथ–सूची

1. वही, पृ.–69
2. वही, पृ.–24
3. हंस, जून–1949
4. हजार–हजार बांहोंवाली, पृ.–48
5. इस गुब्बारे की छाया में, पृ.–63
6. तुमने कहा था, पृ.–18
7. तुमने कहा था, पृ.–42
8. अब तो बंद करो देवी चुनाव का प्रहसन, 1942